गेहूँ में पीली गेरूई रोग का प्रबन्धन

- गेहूँ की फसल का पीली गेरूई रोग *पक्सीनिया स्ट्राईफारमिस* नामक कवक रोग कारक के द्वारा होता है ।
- यह रोग गेहूँ की पत्तियों पर पीली धारियों के रूप में प्रकट होता है।
- भारत के उत्तर पहाड़ी क्षेत्र (जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखण्ड) में बीच बीच में वर्षा के साथ ठंडा तापमान रहने पर यह रोग दिखायी देता है।

पीली गेरूई रोग के लक्षण

इस रोग से भारत के उत्तर पहाड़ी क्षेत्र में महामारी का रूप लेने से बचाने के लिए कृपया उचित सावधानी के साथ साथ निम्न लिखित उपाय भी किये जायें।

1. सभी गॉवों की कृषक सहभागिता से निरन्तर मानीटरिंग की जायें जिसका निरिक्षण उस क्षेत्र के सहायक निदेशक (कृषि) तथा स्थानीय कृषि विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञ और राज्य कृषि विश्व विद्यालय के प्राध्यापक के द्वारा किया जाये। इस रोग की बढ़वार से संबंधित प्रत्येक जिले की प्रगति सूचना उपयुक्त राज्यों के संबंधित कृषि निदेशकों को भेजी जाय।
2. अगर गेहूँ की फसल में पीली गेरूई रोग दिखायी दें, तो प्रोपिकोनाजोल (टिल्ट) 25 ई. सी. या टिबू कोनाजोल 250 ई. सी. (फोलिकॉर) या बेलिटॉन 25 डब्ल्यू0 पी0 की 0.1 प्रतिशत की दर (1 मिली./लीटर) से पावर स्प्रेयर द्वारा छिड़काव का सुझाव दिया जाता है। इस फफूँदनाशी की आधा लीटर मात्रा एक हैक्टेयर क्षेत्रफल (10 मिली./1 नाली क्षेत्रफल) की गेहूँ की फसल को प्रभावी तरीके से छिड़कने के लिए प्रर्याप्त है। एक छिड़काव लगभग

तीन सप्ताह तक प्रभावी रहता है और यदि गेरूई रोग पुनः दिखायी देता है तो इस रोग को पूर्णतया समाप्त करने के लिए एक और छिड़काव वांछित होगा।